उ0प्र0 कृषि अनुसंधान परिषद
U.P. COUNCIL OF AGRICULTURAL RESEARCH
निकट राजकीय उद्यान, करियप्पा मार्ग, आलमबाग, लखनऊ–226005
Near Rajkiya Udhyan, Cariappa Road, Alambagh, Lucknow-226005

पत्रांक: 1259/ एनआरएम / डब्लूबीएसएलएएजी / पीएल / 2021 दिनॉक: 26.12.2024

दिनांक : 26 दिसम्बर, 2024
समय : 12:00 बजे
स्थान : उपकार सभाकक्ष
उपस्थिति : संलग्न

मौसम आधारित राज्य स्तरीय कृषि परामर्श समूह (क्रॉप वेदर वॉच ग्रुप) की वर्ष 2024-25 की इक्कीसवीं बैठक की कृषकों के उपयोगार्थ संस्तुतियाँ

क्रॉप वेदर वॉच ग्रुप की वर्ष 2024-25 की इक्कीसवीं बैठक श्री पियूष कुमार शर्मा, सचिव, उ.प्र. कृषि अनुसंधान परिषद की अध्यक्षता में दिनांक 26 दिसम्बर, 2024 को परिषद के सभाकक्ष में सम्पन्न हुई। बैठक में आचार्य नरेन्द्र देव कृषि एवं प्रौद्योगिक विश्वविद्यालय, अयोध्या के राईस ब्रीडर व मौसम वैज्ञानिक ; चन्द्रशेखर आजाद कृषि एवं प्रौद्योगिक विश्वविद्यालय, कानपुर के मौसम वैज्ञानिक व पादप रोग वैज्ञानिक तथा व्हीट ब्रीडर; आंचलिक भारतीय मौसम विज्ञान केन्द्र, अमौसी, लखनऊ; एन.आई.सी.; उद्यान विभाग; पशुपालन विभाग; कृषि विभाग; भारतीय गन्ना अनुसंधान संस्थान, लखनऊ; उ. प्र. राज्य आपदा प्रबंधन प्राधिकरण, लखनऊ तथा उपकार के वैज्ञानिकों/अधिकारियों ने भाग लिया। उक्त के अतिरिक्त बैठक में बांदा कृषि एवं प्रौद्योगिक विश्वविद्यालय, बांदा; केन्द्रीय मृदा लवणता अनुसंधान संस्थान (क्षेत्रीय अनुसंधान केन्द्र) लखनऊ; रानी लक्ष्मी बाई केन्द्रीय कृषि विश्वविद्यालय, झांसी, कृषि सांख्यिकी, कृषि विभाग, उत्तर प्रदेश के वैज्ञानिकों/अधिकारियों ने ऑनलाइन प्रतिभाग किया।

<u>आगामी सप्ताह का मौसम पूर्वानुमान (26 दिसम्बर, 2024 से 02 जनवरी, 2025)</u>

भारत मौसम विज्ञान विभाग से प्राप्त मौसम पूर्वानुमान के अनुसार इस सप्ताह (26 दिसम्बर, 2024 से 02 जनवरी, 2025) के आरंभिक चरण में 27 से 28 दिसम्बर, 2024 के दौरान प्रदेश के अधिकांश कृषि जलवायु अंचलों में गरज चमक के साथ हल्की वर्षा एवं दक्षिणी पश्चिमी अर्द्धशुष्क मैदानी क्षेत्र एवं संलग्न क्षेत्रों में कहीं-कहीं मध्यम वर्षा होने की संभावना है तदोपरांत मौसम शुष्क रहने की संभावना है। इस दौरान पश्चिमी उत्तर प्रदेश में कहीं-कहीं तेज झोंकेदार हवाओं के साथ ओलावृष्टि होने की भी संभावना है।

प्रदेश के अधिकांश कृषि जलवायु अंचलों में औसत साप्ताहिक अधिकतम तापमान सामान्य के आस-पास रहने की संभावना है। यद्यपि इस सप्ताह के आरम्भिक चरण में 26 दिसंबर से 28 दिसंबर के दौरान इसमें 3-5 डिग्री सेल्सियस की गिरावट आने तथा उसके बाद 2-4 डिग्री सेल्सियस की बढ़ोत्तरी होने की संभावना है। प्रदेश के भाभर तराई क्षेत्र के पश्चिमी भाग एवं पश्चिमी मैदानी क्षेत्र के उत्तरी भाग में औसत साप्ताहिक अधिकतम तापमान 17 से 19 डिग्री सेल्सियस; भाभर तराई क्षेत्र के शेष भाग, पश्चिमी मैदानी क्षेत्र एवं मध्य पश्चिमी मैदानी क्षेत्र के अधिकांश भाग तथा दक्षिणी-पश्चिमी अर्द्धशुष्क मैदानी क्षेत्र के उत्तरी भाग में औसत साप्ताहिक अधिकतम तापमान 19 से 21 डिग्री सेल्सियस जबकि प्रदेश के अन्य कृषि जलवायु अंचलों में यह 21 से 23 डिग्री सेल्सियस रहने की संभावना है।

इस दौरान प्रदेश के भाभर तराई एवं दक्षिणी-पश्चिमी अर्द्धशुष्क मैदानी क्षेत्र के पश्चिमी भाग तथा पश्चिमी मैदानी क्षेत्र के अधिकांश भाग में औसत न्यूनतम तापमान सामान्य के आस-पास; उत्तर-पूर्वी मैदानी एवं पूर्वी मैदानी क्षेत्र के अधिकांश भाग में औसत न्यूनतम तापमान सामान्य से (2 से 3 डिग्री सेल्सियस) अधिक, जबकि प्रदेश के अन्य कृषि जलवायु अंचलों में यह सामान्य से आंशिक रूप से (1 से 2 डिग्री सेल्सियस) अधिक रहने की संभावना है। यद्यपि इस सप्ताह के आरम्भिक चरण में 26 दिसंबर से 28 दिसंबर के दौरान इसमें 2 से 4 डिग्री सेल्सियस की बढ़ोत्तरी होने तथा उसके बाद 3 से 5 डिग्री सेल्सियस की गिरावट आने की संभावना है। प्रदेश के भाभर तराई क्षेत्र के पश्चिमी भाग एवं पश्चिमी मैदानी क्षेत्र के उत्तरी भाग में औसत न्यूनतम तापमान 06 से 08 डिग्री सेल्सियस भाभर तराई एवं पश्चिमी मैदानी क्षेत्र के शेष भाग, मध्य पश्चिमी मैदानी एवं दक्षिणी-पश्चिमी अर्द्धधशुष्क मैदानी क्षेत्र के अधिकांश भाग तथा बुंदेलखंड एवं मध्य मैदानी क्षेत्र के पश्चिमी भाग, विंध्य क्षेत्र के दक्षिणी भाग में औसत न्यूनतम तापमान 08 से 10 डिग्री सेल्सियस जबकि प्रदेश के अन्य कृषि जलवायु अंचलों में यह 10 से 12 डिग्री सेल्सियस रहने की संभावना है।

आगामी द्वितीय सप्ताह के मौसम का दृष्टिकोण (02 जनवरी से 09 जनवरी, 2025)

भारत मौसम विज्ञान विभाग से प्राप्त मौसम पूर्वानुमान के अनुसार इस सप्ताह (02 जनवरी से 09 जनवरी, 2025) के दौरान प्रदेश के भांभर-तराई क्षेत्र के पश्चिमी भाग में कहीं-कहीं छिटपुट वर्षा को छोड़कर मौसम मुख्यतः शुष्क रहने की संभावना है। प्रदेश के समस्त कृषि जलवायु अंचलों में औसत साप्ताहिक अधिकतम तापमान सामान्य से आंशिक रूप से (1 से 2 डिग्री सेल्सियस) अधिक रहने की संभावना है। प्रदेश के भाभर तराई क्षेत्र के पश्चिमी भाग एवं पश्चिमी मैदानी क्षेत्र के उत्तरी भाग में औसत साप्ताहिक अधिकतम तापमान 18 से 20 डिग्री सेल्सियस भाभर तराई क्षेत्र के शेष भाग, पश्चिमी मैदानी एवं मध्य पश्चिमी मैदानी क्षेत्र के अधिकांश भाग तथा दक्षिणी-पश्चिमी अर्द्धशुष्क मैदानी एवं मध्य मैदानी क्षेत्र के उत्तरी भाग में औसत साप्ताहिक अधिकतम तापमान 20 से 22 डिग्री सेल्सियस जबकि प्रदेश के अन्य कृषि जलवायु अंचलों में यह 22 से 24 डिग्री सेल्सियस रहने की संभावना है।

प्रदेश के भाभर तराई एवं मध्य पश्चिमी मैदानी क्षेत्र के पश्चिमी भाग तथा पश्चिमी मैदानी एवं दक्षिणी-पश्चिमी अर्द्धशुष्क मैदानी क्षेत्र के अधिकांश भाग में औसत न्यूनतम तापमान सामान्य से आंशिक रूप से (1 से 2 डिग्री सेल्सियस) अधिक जबकि अन्य कृषि जलवायु अंचलों में औसत न्यूनतम तापमान सामान्य के आस-पास रहने की संभावना है। प्रदेश के भाभर तराई एवं दक्षिणी-पश्चिमी अर्द्धशुष्क मैदानी क्षेत्र के पश्चिमी भाग तथा पश्चिमी मैदानी एवं विंध्य क्षेत्र के अधिकांश भाग में औसत न्यूनतम तापमान 06 से 08 डिग्री सेल्सियस जबकि प्रदेश के अन्य कृषि जलवायु अंचलों में यह 08 से 10 डिग्री सेल्सियस रहने की संभावना है।

कृषि विभाग, उ.प्र. द्वारा दिनांक 21 दिसम्बर, 2024 तक उपलब्ध कराये गये आंकड़ों के अनुसार प्रदेश में कुल रबी की बुवाई का लक्ष्य 135.87 लाख हे. के सापेक्ष कुल रबी फसलों की बुवाई 130.48 लाख हे. में हुई है जो लक्ष्य का 96.04 प्रतिशत है गेहूँ के आच्छादन लक्ष्य 101.12 लाख हे. के सापेक्ष 96.09 लाख हे. में बुआई हुई जो लक्ष्य का 95.03 प्रतिशत है। जौ के आच्छादन लक्ष्य 1.74 लाख हे. के सापेक्ष 1.74 लाख हे. में बुआई हुई जो लक्ष्य का 99.92 प्रतिशत है। मक्का के आच्छादन लक्ष्य 0.58 लाख के सापेक्ष 0.29 लाख हे. में बुआई हुई जो लक्ष्य का 50.05 प्रतिशत है। चना के लक्ष्य 7.28 लाख हे. के सापेक्ष 7.29 लाख हे. में बुआई हुई जो लक्ष्य का 100.17 प्रतिशत है। मटर के लक्ष्य 5.02 लाख हे. के सापेक्ष 4.83 लाख हे. में बुआई हुई जो लक्ष्य का 96.28 प्रतिशत है। मसूर के लक्ष्य 5.98 लाख हे. के सापेक्ष 5.98 लाख हे. में बुआई हुई जो लक्ष्य का 100.07 प्रतिशत है। तिलहनी फसलों में तोरिया की बुवाई लक्ष्य 4.67 लाख हे. के सापेक्ष 4.68 लाख हे. में बुवाई हुई है जो लक्ष्य का 100.14 प्रतिशत है जबकि राई-सरसों के 13.47 लाख हे. लक्ष्य के सापेक्ष 13.57 लाख हे. में बुवाई हुई जो लक्ष्य का 100.62 प्रतिशत है। अलसी के 0.68 लाख हे. लक्ष्य के सापेक्ष 0.68 लाख हे. में बुवाई हुई जो लक्ष्य का 99.93 प्रतिशत है।

मौसम के परिप्रेक्ष्य में किसानों को फसल प्रबन्धन हेतु निम्नलिखित सुझाव दिये जाते हैं:-

- वर्तमान में गेहूं की केवल अतिविलम्ब से बोई जाने वाली किस्मों का समय है अतः बुवाई हेतु अतिविलम्ब से बोई जाने वाली संस्तुत किस्मों का ही चयन करें।
- राई/सरसों में फूल आ रहे हैं (पुष्पावस्था) अतः फसल में किसी भी कृषि रक्षा रसायन का प्रयोग कदापि न करें।
- तिलहनी फसलों में माहूं के प्रकोप के लिये मौसम अनुकूल है अतः संस्तुति अनुसार उपचार करें।
- वर्तमान मौसम बादलों युक्त है। अतः आलू में पछेती झुलसा रोग का प्रकोप हो सकता है। अतः प्रकोप होने की स्थिति में झुलसा बीमारी की रोकथाम हेतु मैंकोजेब/प्रोपीनेब/रिडोमिल (0.1 प्रतिशत) फफूदनाशक 2.0 से 2.5 कि.ग्रा. 1000 लीटर पानी में घोलकर छिड़काव करें। जिन खेतों में बीमारी का प्रकोप हो चुका है उनमें किसी भी फफूदनाशक साईमोक्सेनिल+मैंकोजेब अथवा मेटालेक्जिल + मैंकोजेब का 2.0 से 2.5 प्रति हे. (1000 लीटर पानी) की दर से 15 दिन के अंतराल पर छिड़काव करें।

गेहूँ की खेती

- गेहूँ की अति विलम्ब से बुवाई हेतु क्षेत्रीय संस्तुत किस्मों यथा एच.डी.-3271, एच.आई.1621, डब्लू. आर.-544, के.-7903 (हलना) एवं के.-9423 (उन्नत हलना) पी.बी.डब्लू.-833 आदि की बुवाई 15 जनवरी तक कर दें।
- विलम्ब से गेहूँ की बुवाई करने पर गेहूँ की बीजदर सामान्य से 25 प्रतिशत (125 कि.ग्रा./हे.) बढ़ाकर बुवाई करें तथा विलम्ब से ही बोई जाने वाली किस्मों का चयन करें।
- गेहूं में 20 से 25 दिन के अंतराल पर सिंचाई करते रहें। गेहूं की पहली सिंचाई के बाद नत्रजन की शेष बची मात्रा की आधी मात्रा तथा दूसरी सिंचाई के बाद शेष आधी मात्रा की टापड्रेसिंग करें।
- गेहूँ की बुआई के 20-25 दिन के मध्य पहली सिंचाई के आसपास पौधों में जिंक की कमी के लक्षण दिखाई देने पर 5 किग्रा. जिंक सल्फेट तथा 2.5 किग्रा. बुझे हुये चूने के पानी (2.5 किग्रा. चूने को 10 लीटर पानी में सायंकाल भिगोकर दूसरे दिन पानी निथार कर पानी) का प्रयोग करें।
- सकरी एवं चौड़ी पत्ती दोनों खरपतवारों के नियंत्रण हेतु सल्फोसल्फ्यूरान 75 प्रतिशत (33 ग्राम) + मेटासल्फ्यूरॉन मेथाइल 5 प्रतिशत डब्लू.जी. (20 ग्राम) अथवा फिनोक्साप्राप-पी इथाइल 10 प्रतिशत ई.सी. की 1 लीटर प्रति हे.+मेटासल्फ्यूरान इथाइल 20 प्रतिशत डब्लू.पी. की 20 ग्राम प्रति हे. मात्रा को 500 से 600 लीटर पानी में घोलकर प्रति हे. की दर से फ्लैटफैननॉजिल से प्रथम सिंचाई के बाद 30 से 35 दिन की अवस्था पर छिड़काव करें।

रबी मक्का की खेती

- समय से बोई गई रबी मक्का की फसल में द्वितीय सिंचाई करें तथा उचित नमी की अवस्था में नत्रजन की एक चौथाई मात्रा की टॉपड्रेसिंग करें।
- मक्के में फॉल आर्मी वर्म के लिये अवस्था अनुकूल है अतः 10 से 20 प्रतिशत क्षति की अवस्था में रसायनिक नियंत्रण प्रभावी होता है। इसके बचाव हेतु क्लोरेन्ट्रानिलीप्रोल 18.5 प्रतिशत एस.सी. 0.5 मि.ली. प्रति लीटर पानी अथवा इमामेक्टिन बेनजोइट 0.4 ग्राम प्रति लीटर पानी अथवा थायोमेथाक्सॉम 2.6 प्रतिशत+लैम्बडासाइहैलोथ्रिन 9.5 प्रतिशत 0.5 मि.ली. प्रति लीटर पानी की दर से घोल बनाकर छिड़काव करें।

तिलहनी फसलों की खेती

- राई/सरसों के लीफ माइनर (पत्ती सुरगंक कीट) के नियंत्रण हेतु डाईमेथोएट 30 प्रतिशत ई.सी. अथवा क्लोरपाईरीफॉस 20 प्रतिशत ई.सी. की 1 लीटर मात्रा प्रति हे. की दर से 600 से 700 लीटर पानी में घोलकर छिड़काव करें।
- राई/सरसों के प्रमुख कीट माहू तथा चित्रित बग के नियंत्रण हेतु डाईमेथोएट 30 प्रतिशत ई.सी. 1.0 ली. अथवा डाईक्लोरोवॉस 76 प्रतिशत ई.सी. 500 मि.ली. अथवा इमिडाक्लोप्रिड 17.8 प्रतिशत एस. एल., 250 मि.ली. मात्रा को 500 से 600 लीटर पानी में घोलकर प्रति हे. की दर से छिड़काव करें।
- अल्टरनेरिया पत्ती धब्बा, सफेद गेरूई तुलसिता रोग के नियंत्रण हेतु मैकोजेब 75 डब्लू.पी. की 2.0 किग्रा. अथवा जिनेब 75 प्रतिशत डब्लू.पी. की 2.0 किग्रा. अथवा जिरम 80 प्रतिशत डब्लू.पी. की 2.0 किग्रा. अथवा कॉपर आक्सीक्लोराइड 50 प्रतिशत डब्लू.पी. की 3.0 किग्रा. मात्रा प्रति हेक्टेयर लगभग 600-750 लीटर पानी में घोल कर छिड़काव करना चाहिये।

दलहनी फसलों की खेती

- चने की फसल में एक सिंचाई फूल आने से पूर्व करनी चाहिये। फूल आते समय सिंचाई कदापि न करें।
- मसूर में फूल आने से पूर्व आवश्यकतानुसार सिंचाई करें।
- मटर में फूल आने के समय आवश्यकतानुसार सिंचाई करें तथा पत्तियों, फलियों और तनों पर सफेद चूर्ण की तरह फैले बुकनी रोग (पाउडरी मिल्डयू) की रोकथाम के लिये घुलनशील गंधक 80 प्रतिशत 2 किग्रा. अथवा ट्राईडेमोफॉन 25 प्रतिशत डबलू.पी. 250 ग्राम/हे.लगभग 500-600 लीटर पानी में घोलकर छिड़काव करें।
- चने के खेत में कटुआ कीट (एक सुंडी प्रति मीटर दिखाई देने की स्थिति में) के नियंत्रण हेतु क्लोरपाईरीफॉस 20 प्रतिशत ई.सी. की 2.5 लीटर मात्रा को 500 से 600 लीटर पानी में घोलकर प्रति हे. की दर से छिड़काव करें तथा सेमीलूपर कीट (दो सुंडी प्रति 10 पौध दिखाई देने की स्थिति में) के नियंत्रण हेतु मेटाराइजियम 10 ग्राम प्रति लीटर पानी में घोलकर अथवा बेसिलस थूरिनजिएंसिस (बी.टी.) की 1 कि.ग्रा. मात्रा अथवा एन.पी.वी. (एच.) 2 प्रतिशत ए.एस. 250-300 मि.ली. मात्रा अथवा क्यूनालफास 25 प्रतिशत ई.सी., 2 लीटर मात्रा को 500-600 लीटर पानी में घोलकर प्रति हे. की दर से छिड़काव करें।
- अरहर की फसल इस समय पुष्पावस्था अवस्था में है अतः रोग व्याधियों के लिये सजग रहें।

गन्ना की खेती

- गन्ने की कटाई जमीन के बराबर से करें।
- अन्तः फसलों में आवश्यकतानुसार सिंचाई के बाद उर्वरक का प्रयोग करें।
- जाड़े में काटे गन्ने की पेड़ी में अपेक्षाकृत कम फुटाव होता है। अच्छा फुटाव प्राप्त करने के लिये सिंचाई के उपरान्त ओट आने पर 10 टन/हे. ताजा प्रेसमड डालकर गुड़ाई करें इनसे फुटाव अच्छा होगा।
- लालसड़न रोग से प्रभावित खेत में गन्ने की पेड़ी फसल न लें।

सब्जियों की खेती

- सब्जियों में विशेषतया मिर्च, टमाटर फसल में विषाणु रोग का प्रकोप अधिक हो रहा है इसका फैलाव सफेद मक्खी/हॉपर कीट के द्वारा होता है। इसके फैलाव के रोकथाम हेतु डाईमेथोएट अथवा इमिडाक्लोप्रिड 1 मि.ली./लीटर पानी में घोल बनाकर छिड़काव करें।

- टमाटर तथा मिर्च की फसल को पछेती झुलसा रोग से बचाव हेतु 0.2 प्रतिशत (2 ग्राम/ली.) की दर से मैकोजेब अथवा रिडोमिल (1 ग्राम/ली.) का छिड़काव करें तथा अर्ली झुलसा हेतु मैकोजेब (2 ग्राम/ली.) अथवा कार्बेन्डाजिम (1 ग्राम/ली.) फसलों को कीटों से बचाव हेतु ब्यूवेरिया वेसियाना (फफूंद) 3 से 5 ग्राम प्रति लीटर पानी में घोल बनाकर कीटनाशकों का प्रयोग करें।
- एकीकृत कीट प्रबंधन के लिये गोभीवर्गीय फसलों में फूल बनने की अवस्था के समय नीम सीड कर्नल एक्सट्रैक्ट 5 मि.ली./10 लीटर पानी में मिलाकर 10 से 15 दिनों के अंतराल पर छिड़काव करें।
- गोभीवर्गीय फसलों में डायमंड बैक मॉथ का प्रकोप होने पर क्लोरेन्टरानिलिप्रोल 0.5 से 1.0 मि.ली. रसायन प्रति लीटर पानी में घोल बनाकर छिड़काव करें।

बागवानी की खेती

- आम/लीची में गुजिया कीट (मिलीबग) को पौधों पर चढ़ने से रोकने के लिए भूमि से लगभग 40 से. मी. ऊपर पेड़ के तने के चारों तरफ मिट्टी की पतली परत चढ़ाकर 400 गेज की मोटी सफेद पालीथीन की 25 से.मी. चौड़ी पट्टी लपेट कर सुतली से बांध दें। यदि गुजिया कीट की संख्या अधिक हो तो प्रत्येक पेड़ में क्लोरपाइरीफॉस (1.5 प्रतिशत) 250 ग्रा. की दर से तने के चारों ओर गुड़ाई करके मिट्टी में मिलाने से गुजिया कीट का नियंत्रण किया जा सकता है।
- आम में यदि शाखाओं में डाईबैक रोग/गोंद निकलने की समस्या हो तो पौधों की जड़ों के पास 200 से 400 ग्राम कॉपर सल्फेट प्रति वृक्ष की दर से प्रयोग करें तथा थायोफिनट मिथाइल 1 मि.ली. रसायन प्रति ली. पानी में घोलकर पर्णीय छिड़काव करें।
- आम में तनाबेधक कीड़ों के नियंत्रण के लिये पहले जालों एवं छेदों को साफ कर दें फिर छिद्रों में 0.05 प्रतिशत डाईक्लोरोवॉस का घोल छेदों में डालकर इसे बंद कर दें।
- गुलाब की बडिंग का कार्य, सिंचाई, निराई, सफाई करें एवं पत्तियों में ब्लैक लीफ स्पॉट रोग जिसमें पत्तियां झुलसी हुई प्रतीत हो उन पर कार्बेन्डाजिम 3 ग्राम प्रति लीटर पानी में घोल बनाकर 8 से 10 दिन के अंतराल पर छिड़काव करें।

मशरूम की खेती

- मशरूम उत्पादन हेतु कृषक जिला उद्यान अधिकारी, अधीक्षक राजकीय उद्यान, राजकीय मशरूम प्रशिक्षण केन्द्र, अलीगंज, लखनऊ, औद्यानिक प्रयोग एवं प्रशिक्षण केन्द्र, बस्ती एवं कृषि विज्ञान केन्द्र या कृषि विश्वविद्यालयों से सम्पर्क कर सकते हैं।
- मशरूम की खेती के कक्ष में आर्द्रता 85 प्रतिशत एवं तापमान 18 से 20 डिग्री से. तथा स्वच्छ हवा के आवागमन हेतु बीच-बीच खिड़की दरवाजे खुले रखने के साथ ही समय-समय पर बल्ब जलाते रहे।
- मशरूम की खेती में कई प्रकार के कीट एवं बीमारियां लगती हैं, इनमें से प्रमुख कवक एवं जीवाणु जनित बीमारियों के लक्षण बैग की सतह पर भूरे, हरे और पीले धब्बों के रूप में दिखाई देते है। इसके प्रबंधन के लिये 2 एम.एल. फॉर्मेलिन को 1 लीटर पानी के साथ घोल बनाकर, रूई को घोल में भिगोकर प्रभावित स्थानों पर लगायें तथा आवश्यकता के आधार पर दीवारों पर भी स्प्रे करें।

पशुपालन

- पी.पी.आर. का टीकाकरण 10 जनवरी, 2025 से तथा खुरपका एवं मुंहपका (एफ.एम.डी.) बीमारी का टीकाकरण 15.02.2025 से बकरी/भेंड़ में निःशुल्क किया जायेगा।
- पं.दीन दयाल उपाध्याय मेले का आयोजन दिसम्बर माह में किया जा रहा है, जिसमें निशुल्क चिकित्सा, दवापान एवं गोष्ठियों का भी आयोजन किया जा रहा है, जिसका लाभ कृषक/पशुपालक अपने जनपदीय मुख्य पशुचिकित्सा अधिकारी से सम्पर्क कर उठा सकते हैं।

- कृषकों/पशुपालकों के द्वार पर पशुचिकित्सा उपलब्ध कराने हेतु विभाग के द्वारा मोबाइल वेटनरी यूनिट योजना का संचालन किया जा रहा है। इस योजना का लाभ लेने हेतु सभी कृषक/पशुपालक टोल फ्री हेल्पलाइन नं.-1962 पर सम्पर्क पर योजना का लाभ ले सकते हैं।
- वर्तमान मौसम में ब्याने वाले पशुओं का विशेष ध्यान रखें एवं साथ ही पशुओं को ठंड से बचायें एवं टीन शेड के खुले स्थानों के चारों तरफ बोरा या तिरपाल टांगे।

मत्स्य

- वर्तमान में पानी का तापक्रम 20 डिग्री से कम है अतः तालाब में गोबर की खाद एवं रासायनिक उर्वरकों का प्रयोग बंद कर दें। मछलियों को आवश्यकतानुसार ही पूरक आहार दें।
- बदलते मौसम में फफूँद एवं परजीवी संक्रमण से मछली को बचाने हेतु 40-50 किलोग्राम/एकड़ की दर से नमक का छिड़काव करें एवं भोजन के साथ भी 5 से 6 ग्राम/किलोग्राम भोजन के हिसाब से माह में 7 से 10 दिनों तक मछलियों को खिलाएँ।
- कार्प मछली वाले तालाब में ठंड के मौसम में 15 दिनों के अन्तराल पर जाल चलायें ।
- पंगेशियस मछली वाले तालाब में न्यूनतम पानी का स्तर 8-10 फीट बनायें रखें।
- मछलियों को संक्रमण से बचाव के लिए प्रति एकड़ 500 ग्राम पोटाशियम परमैंगनेट या 500 एम.एल. की दर से वाटर सेनिटाईजर (सोक्रिना डब्लू. एस., पोटाशियम परमेग्नेट, सेनिपॉण्ड, सीफैक्स, क्यू फॉर ऑल, रेसिमैक्स इत्यादि) का प्रयोग करें।
- कार्प मछली वाले तालाब में न्यूनतम पानी का स्तर 5 फीट बनायें रखें।

रेशम

- टसर क्षेत्र के अर्जुन वृक्षारोपण में डाबा फसल के बाद अर्जुन वृक्षों के थाले बनाने तथा आवश्यकतानुसार वृक्षों की पोलार्डिंग का कार्य प्रारम्भ करें।
- शहतूत वृक्षों/झाड़ियों की प्रूनिंग ट्रिमिंग यथाशीघ्र पूर्ण कर लें।
- प्रूनिंग के समय उन्नतशील प्रजाति की टहनियों से नर्सरी स्थापना का कार्य प्रारम्भ कर लें।

वानिकी

- यूकेलिप्टस पौध को अंकुरण कक्ष से छाया कक्ष में स्थानान्तरित कर दें अन्यथा कोहरे से नुकसान होगा।
- पॉपलर की कटिंग क्यारियों में लगा दें तथा बकैन जैसे पतझड़ी पौधों का रोपण कर दें।
- वृक्षारोपण हेतु स्थल का चयन कर लें।

आपदा प्रबंधन

- गर्मी उत्पन्न करने के लिये घर के अन्दर कोयला न जलायें। बंद स्थान खतरनाक हो सकते हैं क्योंकि इससे कार्बन मोनोआक्साइड गैस उत्पन्न हो सकती है जो बहुत जहरीली होती है और कमरे में मौजूद लोगों की जान जा सकती है।
- फ्रास्टबाइट/हाइपोथर्मिया से पीड़ित कोई व्यक्ति शरीर के तापमान में कमी के कारण कपकंपी, बोलने में कठिनाई, नींद न आना, मांसपेशियों में अकड़न, भारी श्वास, कमजोरी और चेतना का नुकसान हो सकता है। हाइपोथर्मिया एक आपातकालीन चिकित्सा है जिसके लिए तत्काल ध्यान देने की आवश्यकता होती है।

क्रॉप वेदर वॉच ग्रुप की अगली बैठक दिनॉक 09 जनवरी, 2025 को अपराह्न 12:00 बजे आयोजित की जायेगी।

नोटः- क्रॉप वेदर वॉच ग्रुप की बैठक की संस्तुतियां वेबसाईट **upcar.up.gov.in** पर भी उपलब्ध हैं।

- क्रॉप वेदर वॉच ग्रुप की बैठक की संस्तुतियां किसान मित्र ए.आई. चैट बॉट **www.kisanmitraup.ai** पर भी उपलब्ध हैं। किसान भाई इस पर भी सवाल पूछ सकते हैं।
- क्रॉप वेदर वॉच ग्रुप की संस्तुतियां कृषि विज्ञान केन्द्रों तथा एफ.पी.ओ. को प्रेषित की जा रही हैं, इनसे अनुरोध है कि यदि इनके कोई सुझाव हो तो परिषद के ईमेल **upcar12@gmail.com** पर प्रेषित करने का कष्ट करें जिससे आगामी बैठकों में उनके सुझावों पर चर्चा कर संस्तुतियां दी जा सकें।

26/12/24

(पियूष कुमार शर्मा)
सचिव

प्रतिलिपिः उपरोक्त की प्रतिलिपि निम्नलिखित को सूचनार्थ एवं आवश्यक कार्यवाही हेतु प्रेषित।

1. निजी सचिव, माननीय मंत्री, कृषि, कृषि शिक्षा एवं अनुसंधान, उ.प्र. शासन को माननीय मंत्री जी के अवलोकनार्थ।
2. निजी सचिव, माननीय राज्य मंत्री, कृषि, कृषि शिक्षा एवं अनुसंधान, उ.प्र. शासन को माननीय राज्य मंत्री जी के अवलोकनार्थ।
3. निजी सचिव, माननीय अध्यक्ष, को माननीय अध्यक्ष जी के अवलोकनार्थ।
4. निजी सचिव, मुख्य सचिव, उ.प्र. शासन, लखनऊ।
5. निजी सचिव, कृषि उत्पादन आयुक्त, उ.प्र. शासन को महोदय के सूचनार्थ।
6. प्रमुख सचिव, कृषि, कृषि शिक्षा एवं अनुसंधान, उ.प्र. शासन, लखनऊ।
7. अपर मुख्य सचिव, उद्यान, उ.प्र. शासन।
8. अपर मुख्य सचिव, पशुपालन, उ.प्र. शासन।
9. अपर मुख्य सचिव, मत्स्य, उ.प्र. शासन।
10. अपर मुख्य सचिव, रेशम, उ.प्र. शासन।
11. अपर मुख्य सचिव, नियोजन योजना भवन, लखनऊ।
12. कुलपति, च.शे.आजाद कृषि एवं प्रौद्योगिक विश्वविद्यालय, कानपुर, आ.न.दे.कृ. एवं प्रौद्योगिक विश्वविद्यालय, कुमारगंज, अयोध्या, सरदार वल्लभभाई पटेल कृषि एवं प्रौद्योगिक विश्वविद्यालय, मोदीपुरम, मेरठ, बॉदा कृषि एवं प्रौद्योगिक विश्वविद्यालय, बॉदा, सै. हिग्गिनबॉटम कृषि, प्रौद्योगिकी एवं विज्ञान विश्वविद्यालय, प्रयागराज।
13. गन्ना आयुक्त, गन्ना आयुक्त कार्यालय, 17 न्यू बेरी रोड, गन्ना किसान संस्थान, डालीबाग, लखनऊ।
14. आयुक्त एवं सचिव, राजस्व परिषद उ.प्र., केसरबाग, लखनऊ।
15. राहत आयुक्त, उ.प्र. को इस आशय से प्रेषित कि वह ग्राम प्रधान को समूह की संस्तुतियां प्रेषित करेगें।
16. अपर मुख्य कार्यपालक अधिकारी, उ. प्र. राज्य आपदा प्रबंधन प्राधिकरण, लखनऊ।
17. समस्त जिलाधिकारी, उ.प्र.।
18. निदेशक कृषि, कृषि भवन, लखनऊ।
19. निदेशक, भारतीय गन्ना अनुसंधान संस्थान, रायबरेली रोड, लखनऊ।
20. निदेशक, केन्द्रीय उपोष्ण बागवानी संस्थान, लखनऊ।
21. निदेशक, राष्ट्रीय मत्स्य आनुवांशिकी संसाधन ब्यूरो, लखनऊ।

22. अध्यक्ष, केन्द्रीय मृदा लवणता अनुसंधान संस्थान, क्षेत्रीय अनुसंधान केन्द्र, लखनऊ।
23. निदेशक, उ.प्र. गन्ना शोध परिषद, शाहजहांपुर।
24. निदेशक, रेशम, रेशम विभाग, गोमती नगर, लखनऊ।
25. निदेशक, मत्स्य, मत्स्य निदेशालय, फैजाबाद रोड, लखनऊ।
26. निदेशक, उद्यान, उद्यान विभाग, लखनऊ।
27. निदेशक, पशुपालन, पशुपालन विभाग, लखनऊ।
28. निदेशक, राज्य कृषि प्रबंधन संस्थान, रहमानखेड़ा, लखनऊ।
29. प्रधान मुख्य वन संरक्षक एवं विभागाध्यक्ष, वन विभाग, 17 राणा प्रताप मार्ग, नरही, लखनऊ।
30. प्रबन्ध निदेशक, बीज विकास निगम, बादशाहनगर, लखनऊ।
31. निदेशक, सांख्यिकी, कृषि विभाग, उत्तर प्रदेश।
32. निदेशक प्रसार, च.शे.आजाद कृषि एवं प्रौद्योगिक विश्वविद्यालय, कानपुर/ आ.न.दे.कृ. एवं प्रौद्योगिक विश्वविद्यालय, कुमारगंज, अयोध्या/ सरदार वल्लभभाई पटेल कृषि एवं प्रौद्योगिक विश्वविद्यालय, मोदीपुरम, मेरठ/ बॉदा कृषि एवं प्रौद्योगिक विश्वविद्यालय, बॉदा/ सै. हिग्गिनबॉटम कृषि, प्रौद्योगिकी एवं विज्ञान विश्वविद्यालय, प्रयागराज।
33. निदेशक, दूरदर्शन, लखनऊ।
34. निदेशक, आकाशवाणी, लखनऊ।
35. निदेशक, रिमोट सेन्सिग एप्लीकेशन सेण्टर, सेक्टर जी, जानकीपुरम, कुर्सी रोड, लखनऊ।
36. निदेशक, कृषि मौसम, मौसम केन्द्र, अमौसी, लखनऊ।
37. निदेशक सूचना, सूचना एवं जनसंपर्क विभाग, उ.प्र. लखनऊ।
38. अपर कृषि निदेशक(सामान्य), कृषि निदेशालय, कृषि भवन, लखनऊ।
39. अपर कृषि निदेशक, प्रसार, कृषि भवन, लखनऊ।
40. अपर कृषि निदेशक, कृषि रक्षा, कृषि भवन, लखनऊ।
41. संयुक्त कृषि निदेशक, शोध एवं मृदा सर्वेक्षण, कृषि भवन, लखनऊ को किसान कॉल सेंटर के उपयोगार्थ प्रेषित।
42. कृषि विभाग के सभी संयुक्त कृषि निदेशक, उप कृषि निदेशक एवं जिला कृषि अधिकारी
43. प्रदेश के 20 कम्युनिटी रेडियो।
44. समस्त वरिष्ठ वैज्ञानिक एवं अध्यक्ष, कृषि विज्ञान केन्द्र, उ.प्र।
45. प्रदेश के 1500 एफ.पी.ओ.
46. किसान मित्र चैट बॉट, कृषि समृद्धि टीम, कृषि विभाग, लखनऊ।
47. बैठक में उपस्थित संबंधित अधिकारी/वैज्ञानिक।
48. निजी सचिव महानिदेशक, उपकार को महानिदेशक महोदय के सूचनार्थ।

26-12-24

(विनोद कुमार तिवारी)
प्रधान वैज्ञानिक अधिकारी एवं सदस्य सचिव

संलग्नक

मौसम आधारित राज्य स्तरीय कृषि परामर्श समूह (क्राप वेदर वाच ग्रुप) की वर्ष 2024-25 की इक्कीसवीं बैठक दिनांक 26 दिसम्बर, 2024 की उपस्थिति

1. श्री पीयूष कुमार शर्मा, सचिव, उपकार, लखनऊ।
2. डा. संजीव कुमार, उपमहानिदेशक, उपकार, लखनऊ।
3. डा. टी.के. श्रीवास्तव, प्रधान वैज्ञानिक एवं प्रभारी मौसम विभाग, भारतीय गन्ना अनुसंधान संस्थान, रायबरेली रोड, लखनऊ।
4.
5. डा. अनिल दीक्षित, संयुक्त निदेशक प्रक्षेत्र, पशुपालन, उ.प्र.
6. डा. सौरभ दीक्षित, राईस ब्रीडर, क्राप रिसर्च स्टेशन, मसौधा, आचार्य, नरेन्द्र देव कृषि एवं प्रौद्योगिक विश्वविद्यालय, अयोध्या।
7. डा. समीर कुमार विश्वास, प्राध्यापक, पादप रोग विज्ञान विभाग, चन्द्रशेखर आजाद कृषि एवं प्रौद्योगिक विश्वविद्यालय, कानपुर।
8. डा. एस.एन. पाण्डेय, एग्रोमेट्रोलाजिस्ट/नोडल ऑफिसर चन्द्रशेखर आजाद कृषि एवं प्रौद्योगिक विश्वविद्यालय, कानपुर।
9. डा. सोमवीर सिंह, व्हीट ब्रीडर, सेक्शन ऑफ रबी सीरियल, चन्द्रशेखर आजाद कृषि एवं प्रौद्योगिक विश्वविद्यालय, कानपुर।
10. श्री अमरनाथ मिश्र, सहायक प्राध्यापक (कृषि मौसम), नरेन्द्र देव कृषि एवं प्रौद्योगिक विश्वविद्यालय, अयोध्या।
11. डा. विनोद कुमार तिवारी, प्रधान वैज्ञानिक अधिकारी एवं सदस्य सचिव, उत्तर प्रदेश कृषि अनुसंधान परिषद, लखनऊ।
12. श्री संजय श्रीवास्तव, वरिष्ठ निदेशक, एन.आई.सी., लखनऊ।
13. श्री अतुल कुमार सिंह, प्रभारी वैज्ञानिक, आंचलिक भारतीय मौसम विज्ञान केन्द्र, अमौसी, लखनऊ।
14. डा. राकेश चौधरी, वैज्ञानिक, अनुवांशिकी एवं पादप प्रजनन विभाग, रानी लक्ष्मी बाई केन्द्रीय कृषि विश्वविद्यालय, झांसी (ऑनलाइन)।
15. दिनेश शाह, प्राध्यापक, शस्य विज्ञान एवं इंचार्ज, एग्रोमेट आबजरवेट्री, बांदा कृषि एवं प्रौद्योगिक विश्वविद्यालय, बांदा (ऑनलाइन)।
16. डा. अनसुमान सिंह, वैज्ञानिक, अनुवांशिकी एवं पादप प्रजनन विभाग, रानी लक्ष्मी बाई केन्द्रीय कृषि विश्वविद्यालय, झांसी (ऑनलाइन)।
17. श्री के.पी.सिंह, उप कृषि निदेशक, (सांख्यिकी), कृषि निदेशालय, उत्तर प्रदेश (ऑनलाइन)।
18. डा. अनूप कुमार दीक्षित, प्रधान वैज्ञानिक, केन्द्रीय मृदा लवणता अनुसंधान संस्थान (क्षेत्रीय अनुसंधान केन्द्र) लखनऊ (ऑनलाइन)।
19. श्री अरविंद कुमार त्रिपाठी, व0 प्रा0 स0 (ग्रुप बी), कृषि विभाग, उ.प्र.।
20. डा. जय पाल, वैज्ञानिक अधिकारी, उपकार, लखनऊ।
21. श्रीमती प्रियंका द्विवेदी, प्रोजेक्ट एक्सपर्ट, उ.प्र. डिजास्टर मैनेजमेंट एथारिटी, प्रथम तल पिकअप भवन, गोमती नगर, लखनऊ
22. श्री नेत्रपाल यादव, उद्यान विशेषज्ञ, उद्यान भवन, सप्रू मार्ग लखनऊ।
23. डा. अनुष्का पाण्डेय, प्रोग्राम मैनेजर, क्राप वेदर वॉच ग्रुप, उपकार, लखनऊ।